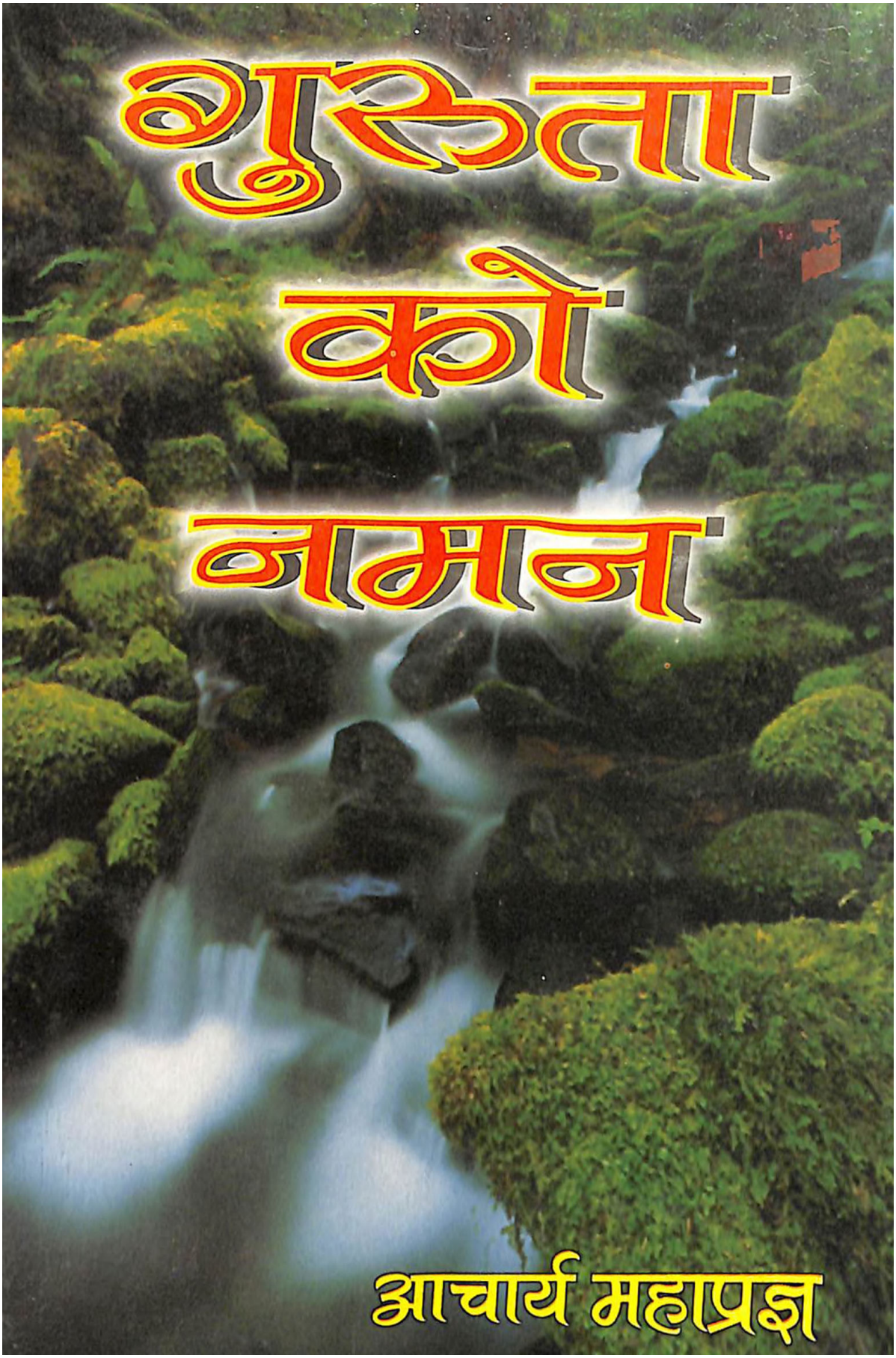

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

गुरुता को नमन

आचार्य महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं-३४१३०६ (राज.)

समाकलन :
साध्वी विमलप्रज्ञा

संस्करण : 2004

मूल्य : ३०/- रुपया मात्र

मुद्रक : कला भारती, नवीन शाहदरा, नई दिल्ली

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रस्तुति

कुछ कविताएं अंतःस्फुरणा से लिखी जाती हैं और कुछ प्रसंगवश। तेरापंथ धर्म संघ में कविता लिखने के तीन स्वतः सिद्ध प्रसंग हैं–

१. मर्यादा महोत्सव

२. भिक्षु चरमोत्सव

३. वर्तमान आचार्य का पट्टोत्सव

प्रस्तुत पुस्तक में संगृहीत कविताएं इन प्रसंगों पर लिखी हुई हैं।

महावीर जयंती के प्रसंग पर मुख्यतया भाषण-संभाषण का कार्यक्रम रहता है, काव्य पाठ के अवसर कम आते हैं फिर भी अंतस्तोष के लिए कभी-कभी कुछ कविताएं लिखी गईं।

कविता में शब्द गौण होते हैं, लक्षणा प्रमुख इसलिए अपेक्षित होता है–पाठक की आंख शब्द-पाठ से आगे अर्थ-पाठ तक पहुंच जाए।

सूरत — **–आचार्य महाप्रज्ञ**

२७ अगस्त, २००३

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

भगवान महावीर

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१

तुम्हारे पद-चिह्नों का अनुगमन करने से पूर्व
मैंने देखा—वे कैसे हैं?
अनुगमन ही किया जाए तो
उन्हीं का किया जाए जो स्पष्ट हों
स्थिर हों और लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते हों
मैंने देखा—
तुम्हारे पद-चिह्न ठेठ वहां जाते हैं
जहां जाने पर साध्य सिद्धि बन जाता है
और साधक सिद्ध बन जाता है
जहां साधना और स्वभाव दो नहीं होते
और जहां जाने के लिए
बहुत खपना पड़ता है
बहुत तपना पड़ता है
उस परम लक्ष्य तक
तुम्हारे चरण-चिह्न अंकित हैं
हजारों आंधियां आयीं और हजारों तूफान
हवा के अनगिन झोंके और अनगिन भूचाल
न जाने कितनी बार
सर्दी और गर्मी ने अपना शासन किया
और वर्षा ने कितने काया-पलट किए।
पर वे तुम्हारे चरण-चिह्न आज भी अमिट हैं।
वे बहुत स्पष्ट हैं
लगता नहीं कि वे हजारों वर्ष पुराने हैं

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तुम शाश्वत में विश्वास करते थे
और शाश्वत वही होता है
जो कभी पुराना न हो
तुम सत् में विश्वास करते थे
और सत् वही होता है
जो कभी धुंधला न हो
तुम चैतन्य में विश्वास करते थे
और चैतन्य वही होता है
जो न होने के लिए कभी न हो
तुम आनंद में विश्वास करते थे
और आनंद वही होता है
जो कभी परोक्ष न हो।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

उनकी एक-एक रेखा में
आज भी तुम्हारी साधना साकार हो रही है।
और तुम्हारी अहिंसा ने पथ को इस प्रकार
क्षुण्ण किया है कि शेष सारे पथ
उसी में विलीन होना चाहते हैं।
तुमने वे सब पथ ढूंढे थे
जिनमें पथ होने की क्षमता थी
अपथ कभी पथ बनता नहीं
पथ वही बनता है जो पथ है
ओ राजपथ के पथिक!
तुम्हारे पद-चिह्नों का अनुगमन करने से पूर्व
मैं देख चुका हूं कि 'वे कैसे हैं।'

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२

महावीर को महावीर ही रहने दो तुम॥
उस अनंत असीम गगन को
आज किसलिए चले सांधने।
उस अथाह-अपार जलधि को
आज किसलिये चले बांधने।
सहज पक्व उस कल्पवृक्ष को
आज किसलिये चले रांधने।
मत सांधो जो स्वयं युक्त है।
मत बांधो जो स्वयं मुक्त है।
मत रांधो जो स्वयं भुक्त है।
युक्ति दृष्ट हो
मुक्ति इष्ट हो
भुक्ति सृष्ट हो

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तो महावीर को महावीर ही रहने दो तुम॥१॥
बोल रहा है जीवन कण-कण, आज उसी पर चल बोलने
तुला हुआ जो रहा निरंतर, आज चले तुम उसे तोलने
खुला हुआ जो गांठ गांठ पर आज चले तुम उसे खोलने
बोलो तो फिर आग जलाकर
तोलो भर गागर में सागर
खोलो विष को अमृत बनाकर
सहज क्रांति हो
विगत भ्रांति हो
प्राप्य शांति हो
तो महावीर को महावीर ही रहने दो तुम॥२॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३

पुरुषोत्तम! तुमसे पौरुष को, प्राप्त हुई है प्रचुर-प्रतिष्ठा।
तुम पुरुष थे और पुरुष में, व्याप्त, तुम्हारी अविकल निष्ठा॥
तुमने मुक्त किया मानव को, शास्त्रों की मोहक कारा से।
पौरुषेय है शास्त्र सभी ये, निस्यंदित अनुभव धारा से॥
पुरुष स्वयं है भाग्य-विधाता, नहीं यंत्रवत् संचालित है।
पुरुष स्वयं आत्मा परमात्मा, अपने विक्रम से पालित है॥
महावीर! धरती का कण-कण आज तुम्हारे प्रति प्रणत है।
छिपे हुए अपने पौरुष को, जागृत करने को अभिनत है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४

स्वर्ण कलश था
गड़ा हुआ मिट्टी में
उजली आभा
धुंधली सी बन
हुई तिरोहित
तुमने तोड़ी
मिट्टी की परतें
आंखों में आंजा अंजन
पढ़ा मनुज ने—
एकैव मानुषी जाति

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य भिक्षु

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

५

हे अनाम के नाम संतवर
हे अरूप के रूप महान्।
नाम-रूप के इस जंगल में
हे अनाम! तुमको प्रणाम
हे अकाम! तुमको प्रणाम।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

६

बन विदेह तुम रहे देह में
इसीलिए अब भी सदेह तुम
स्नेह मुक्त बन जिए निरंतर
इसलिए हो महास्नेह तुम!
मृत्युधाम में रहकर तुमने
मृत्युंजय! अमरत्व पा लिया
अंधकार में रहकर तुमने
सस्वर दीपक राग गा लिया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

७

जिसने किया
मौत से प्यार
उसके लिए खुला
सत्य का द्वार।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

८

मौत से डरता नहीं मैं
मौत मुझसे डर चुकी है।
मौत से मरता नहीं मैं
मौत मुझसे मर चुकी है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

९

मृत्युंजय!
तुमने जीता मृत्यु का डर
तुम मृत्युंजय हो गये।
जीवन की आशंसा से दूर
तुम आदर्श में खो गए।
तुम नहीं जी रहे थे
जीने के लिए ललचाने वालों की तरह
तुम नहीं मर रहे थे
मृत्यु से घबराने वालों की तरह
तुमने हर बार झेला
मौत की चुनौती को।
तुम मौत की कल्पना से नहीं डरे
इसलिए तुम मरकर भी अमर हो गए
तुमने जीता मृत्यु का डर
तुम मृत्युंजय हो गए।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१०

जी रहा हूं चेतना में
अमरता की लौ जलाए।
स्पंद में अस्पंद हूं मैं
श्वास का दीपक जलाए।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

११

तुम्हारे पास शब्द नहीं थे
मेरे पास अर्थ नहीं था
जब तुम मुझसे मिले
तुम्हें शब्द मिल गया
मुझे अर्थ मिल गया
जग को प्रकाश मिल गया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१२

धूप छांह
दोनों सटे हुए हैं
फिर भी कभी न मिलते
कभी न मिलते
हिंसा और अहिंसा के छोर

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१२

दूध आक का
दूध गाय का
नाम दूध
पर
एक नहीं है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१४

बताओ अब मैं क्या बताऊं
कहो कह पाऊं
या मौन रह जाऊं
यह सुनने को उत्सुक
किया तूने नूतन काम
मुझे नहीं दीखता कुछ भी
कैसे शब्द सझाऊं
बताओ अब मैं क्या बताऊं
नहीं शशक के सींग उगाएं
नहीं गगन के फूल लगाएं
नहीं कभी भी वंध्यासुत को
तुमने कर से पाला
ना मेंढ़क के रोम उगाए
नया काम कुछ ना कर पाए
कैसे कहूं
तुम्हें महापुरुष!
और कैसे करुं
कोटिशः प्रणाम
महामहिम!
जो कुछ किया हो
तो संकेत जताओ
बताओ अब मैं क्या बताऊं
कहो कह पाऊं
या मौन रह जाऊं

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

नहीं तुम्हारा जन्म नाभि से
नहीं काल से
नहीं कमल से
नहीं गगन से भी तुम उतरे
नहीं उद्भव था भू अंचल से
दो हाथ थे
दो पैर थे
था मुंह भी एक
थे दो ही नयन
मानव जैसा ही शरीर
नहीं कुछ अंतर पाऊं
बताओ अब मैं क्या बताऊं
कहो कह पाऊं
या मौन रह जाऊं।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

नहीं किसी का राज्य छीना
नहीं किसी से सीस नंवाया
नहीं सताया
नहीं अनुशासन जमाया
नहीं किसी का
सर्वस्व लुटवाया
सबसे संकोच करते
नहीं चींटी को भी
इधर से उधर धरते
नम्र थीं भावनाएं
नहीं मानते स्वयं को
जगत् शिरोमणि
नभोमणि
क्या कर दिखाऊं
बताओ अब मैं क्या बताऊं
कहो कह पाऊं
या मौन रह जाऊं

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

नहीं नेतृत्व के
परचे बांटे।
नहीं बिखेरे कांटे
नहीं गुत्थियां उलझाई
नहीं राजस्व माना
नहीं जाना
रोटी पानी के लिए
घूमते स्वयं घर-घर
स्थान रहने को
कहां मिलता
सुलभ
वस्त्र की कठिनाई
क्या कैसे बताऊं
बताओ अब मैं क्या बताऊं
कहो कह पाऊं
या मौन रह जाऊं।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

बताया धर्म अहिंसा में
अहिंसा ही दया
दया ही अहिंसा
ये दोनों एक तत्त्व
तत्त्वतः
दया न हिंसा सह सकती
न होती है हिंसा में दया
वही पुरातन
सनातन सिद्धांत
था महावीर का प्रधान
वही विधान
वही समाधान
क्या परिवर्तन दिखाऊं
बताओ अब मैं क्या बताऊं
कहो कह पाऊं
या मौन रह जाऊं।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

नहीं युग की आवाज सांधी
बांधी सीमाएं
अनुशासन एकदम
कठिनतम
नहीं चले युग के चलाए
नहीं हिले प्रतिकूलता दिखाए
नहीं छिपाया सत्य
कटुतम हो प्रतीत
गतानुगतिक को
पक्ष रंजित चेतना को
सत्य कैसे छिपाऊं
बताओ अब मैं क्या बताऊं
कहो कह पाऊं
या मौन रह जाऊं।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

बस अधिक टीका टिप्पणी
न होगी
लेखनी क्या यहीं रुकोगी
झुकोगी
कहोगी न ?
क्या थे वे महान
दो उनके जीवन का ज्ञान
लो लो लिखाऊं।
थे सत्य के उपासक
महावीर के अनुयायी
उतारा जीवन में
उनका उपदेश
आदेश
बनाया वैसा ही आचार
वैसा ही विचार
वैसा ही संसार
बसाया
चाहे आत्मवान्
चाहे महापुरुष
चाहे नूतन
चाहे पुरातन
चाहे सो मानो
चाहे सो जानो
साधना में जीवन बिताया
पथ दिखाया
हृदय की आवाज
सबको सुनाऊं

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१५

उद्‌गार
एक महापुरुष के उद्‌गार
वीर रस साकार
आत्म-बल का
अक्षय भंडार
निभाने को नियम
यम
रहते थे तैयार
हरदम
करने को जीवन का
उत्सर्ग
वही था स्वर्ग
अपवर्ग
नहीं थी प्राणों की परवाह
अंतर दिल की आह
कोई चाह
रहते बेपरवाह
देखते केवल एक
मुक्ति की राह
नहीं था मृत्यु का डर
रहते निडर
अमर
साधना में तत्पर

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

जाते लेने का भिक्षा
होता तिरस्कार
कहीं सत्कार
एक सार
रखते तितिक्षा
पाई थी आगम की शिक्षा
लेकर आहार पानी
जंगल में चले जाते
शांति में बिताते काल
वही था हमारा हाल
रख के आहार पानी
महीरुह की छाया में
लंबमान काया में
मध्याह्न में
करते थे धूप-स्नान
अम्लान
दत्तध्यान
रहते थे मग्न
लग्न
साधना में महान्

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

संध्या के समय
बसती में चले जाते
जहां कहीं स्थान पाते
करते तपस्या
एक दिन भोजन
एक दिन उपवास
चलता रहा
यही आयास
कई वर्षों तक
होने वाला था प्रकाश
तब तक
किंतु हम ऐसा नहीं जानते थे
होगा हमारी विचार धारा का
विकास
जिसमें है महावीर वाणी का
निवास

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

छा रहा था जनता में हठ का प्रकोप
आटोप
कर देते यों ही असत्य आरोप
नहीं जानते थे—
ऐसे दीक्षित बनेंगे जन
छोड़ छोड़ परिजन धन
हमें सोंप देंगे मन, वचन, तन
नहीं जानते थे ऐसे
होगा श्रावक समाज
मान लेगा हमें अपने
शिर का ताज
कैसे हो सकता अंदाज
चारों ओर आती एक
निन्दा की आवाज
जाने हो रहा हो
यही आम-रिवाज
कर रखा था ऐसा

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

निश्चय
विचार-विनिमय
बनकर साधना में तन्मय
आत्मा का कल्याण
करेंगे सहर्ष
चलता रहेगा
परीषहों से संघर्ष
साधना की वेदी पर
हंसते-हंसते कर देंगे प्राण
न्योछावर
इससे तो बढ़कर
है न कोई डर
केवल जीना ही जानता है
उसे होता है डर
जानता है मरना उसे
है न कोई डर
रहेंगे अटल
अडिग अचल
पल-पल अमर
साधना के पथ पर
न जाने क्या हुआ

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

यकायक
हटा भ्रम का आवरण
बदला वातावरण
शनैः शनैः छुप छुप
आने लगे कई लोग
रात में
एकांत में
चलती थी रोक टोक
जचने भी लगी बात
आया अवदात
स्वर्णिम प्रभात

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

थिरपाल-फतेचंद
युगल मुमुक्षु
किंचित् विवक्षु
आये निकट
बोले प्रकट
सुनो महाराज
आज
होकर सदय
हमारी विनय
अनुनय
यद्यपि तपस्या
आर्य!
परम प्रशस्या है
तो भी अनिवार्य है
परोपकार साथ-साथ
करे अर्ज जोड़ हाथ
दो हमें आज्ञा
करेंगे तपस्या हम
निर्मम
उपदेश दो जनता को तुम
हो बुद्धिमान्
ज्ञानवान्
बन जायेंगे अबोध जन
सहज सुबोध
मानो अनुरोध
होगा परम प्रमोद
विनोद
सुमति आसीन रहो
सतत तुम्हारी गोद

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

लालसा से अछूत पूत
नीति-प्रीति
अनुभूति
मुमुक्षु यमल की
अमल की
हृदय कमल की
कलिका को देखकर
मरंद सम लेखकर
तर तर
पुनः जाग उठी भावना
पावन परोपकार की
सत्य धर्म के
प्रचार की

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१६

तुम और सब कुछ थे
पर अवसरज्ञ नहीं थे
दो सौ वर्ष बाद करने के काम
तुमने पहले ही कर डाले।
मुसीबतों के सांप थे
तुमने अपने ही हाथों पाले
तुमने ही की थी
अपने भगवान् की आलोचना
इस युग में
जो बंधा हुआ था
अतीत की बेड़ी से।
इतना बड़ा दुस्साहस
इसीलिए तुम्हें सहना पड़ा
हजारों-हजारों का आक्रोश।
इस स्वतंत्र चिंतन के युग में
आलोचना करना उचित होता
पर तुम पहले ही कर चुके
इसलिए मैं कहता हूं
तुम और.....॥१॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तुमने ही दिया था
साधना शुद्धि का सूत्र।
तुमने ही उजागर किया था
संप्रदाय से परे
सत्य को देखने का दृष्टिकोण।
तुम अठारहवीं शताब्दी में जन्मे
मरुभूमि में
अनपढ़ लोगों के बीच
यह भूलों का सिलसिला
तुम्हारे जन्म से ही चल रहा है।
इस बीसवीं शती में जन्म लेते तो
तुम कुछ और होते
पर अवसरज्ञ नहीं थे॥२॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१७

तुम जन्मे फिर इस उत्सव को
कैसे औ कैसे
स्वर्गवास का दिवस कहूं मैं
तात्त्विक गुत्थी उलझ रही है
कैसे मौन रहूं मैं ?
जीवन मृत्यु तुम्हारे
तत्त्व भरे चिंतन में
कोई मौलिक तत्त्व नहीं है
एक अवस्था परिवर्तन है
क्षणभंगुर तन
उसका
मोह नहीं था
लोभ नहीं था
क्षोभ नहीं था
द्रोह नहीं था
दूर हुआ तन
निकट हुआ मन
आत्मा आत्मा में
विकसित हो तुम
फलित हुई है सत्य साधना
अनगिन अनगिन आत्माओं में
अक्षर स्वर से बोल रहे तुम
इसको
जन्म दिवस क्या नहीं कहूं मैं
तात्त्विक गुत्थी उलझ रही है
कैसे मौन रहूं मैं ?

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अणुओं का वह एक संगठन
सीमित तुमको
जता रहा था
अज्ञानी था
आखिर जड़ था
नहीं भविष्य पहचान रहा था
पर असीम की सीमा
अब कितनी और रहेगी
अखरी
बाल क्षणों में
कुछ एक क्षणों में
फटा
फटाटोप के साथ
विद्रोह स्फुलिंगों से
भीषण लपटों से
अम्बर को छूता
इक सेनानी की
छोटी सी टुकड़ी पर
घोर रौद्र वह आक्रमण था
सोचा जग ने
विकट पराभव होगा
मसला सब हल होगा
विश्व विजेताओं की सूची में
नाम बड़े गौरव से
अमर हमारा होगा

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

जड़ बन्धन कुछ प्रतनु हुआ
कुछ शिथिल हुआ
जनता का वह लक्ष्य अमलतम
कुछ अंशों में सफल हुआ
तुम भी कुछ बाहर आ पाए
उस सीमा से
संकीर्णतमा से
सतत रहा चालू आंदोलन
वर्षों तक
कई युगों तक
वह विक्रमशाली था
अणुओं की उस करामात से
करता अपनी रखवाली था।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

उद्घाटित कर सत्य सनातन
तुमने लोगों में जोश भरा
ज्यों रोष भरा
त्यों उभरे सीने उनके
हुए प्रहार अकल्पित चारों
ओर वही सबको अखरा
नीति वर्तता
तुम्हें प्रलोभन देता रहता
सीमा मुक्त किए जाता था
किन्तु तुम्हारे अन्तर्मन में
द्वन्द्व निरन्तर
जड़ की जड़ से मचा हुआ था
द्वन्द्वों की भंगुर लहरों में
आखिर कब तक टिक सकता था
छूट गया
वह टूट गया

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

भादव की तेरस दिन
तुम उन्मुक्त हुए थे
उस सीमा से मुक्त हुए थे
उस जनता के उपकारों से
आभारों से
जिसने घोर विरोध किया था
अपनी भावी संतानों का
मानो मार्ग प्रशस्त किया था
अपकारी क्यों ?
उपकारी है
तुम इतने द्रुत कैसे
क्यों जाने कब
सार्ध तीन कर की सीमा से
आत्मा आत्मा में रम पाते
आत्मा से था प्रेम सनातन
आत्म-रमण को
फिर कैसे
नहीं तुम्हारा जन्म कहूं मैं
तात्त्विक गुत्थी उलझ रही है
कैसे मौन रहूं मैं ॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१८

एक निर्मल धारा
भूमि पर बहने को बाध्य है।
एक ज्योतिपुंज फैला है
हमारे बीच रहने को बाध्य है।
बहना अभी शेष है
इसलिए कभी धारा
भीतर बहती है
कभी बाहर बहती है।
फैलना अभी शेष है
इसलिए कभी बिन्दु बनता है
कभी रेखा बनता है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

एक महान् आत्मा
हम लोगों के बीच है
कर्म भुगतने अभी शेष है
इसलिए कभी अपने भीतर जाते हैं
कभी बाहर आते हैं।
कोई महान आत्मा,
कुछ कर्म अभी शेष है
इसलिए हम लोगों के बीच
रहकर उन्हें भुगत रहे हैं,
करुणा का स्रोत बहा
मानव जाति का भला करने के बहाने।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१९

वर्तमान की समस्या को समझे बिना
कोई भी विद्वान नहीं बनता।
वर्तमान की समस्या को सुलझाए बिना
कोई भी महान् नहीं बनता।
तुम विद्वान् थे इसीलिए कि
तुमने वर्तमान को पहचाना था।
तुम महान् थे इसीलिए कि
तुमने वर्तमान को माना था॥१॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तुमने वर्तमान का जीवन जिया
इसीलिए क्रांति
तुम्हारे कदमों के पीछे चलती रही
तुमने वर्तमान को बहुत दिया
इसलिए क्रांति
तुम्हारे इंगित पर फलती रही
ओ वर्तमान के जागरूक प्रहरी!
ये अतीत के पुजारी
तुम्हारी प्रतिमा को पूज रहे हैं
अतीत के पुष्पों से॥२॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तुमने हजारों वर्ष पुराने
पदचिह्नों को मिटा
नए पदचिह्न अंकित किए
वर्तमान की धूलि पर
फिर तुम कैसे हो सकते हो
अतीत के प्रहरी ?
फिर कैसे चढ़ाई जा सकती है
तुम्हारी प्रतिमा पर
अतीत की पुष्पांजलि ? ॥३॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तुम्हारा वर्तमान
हमारा अतीत है
और हमारा वर्तमान
तुम्हारा भविष्य।
फिर भी हम तुम्हें देख रहे हैं
हमारे वर्तमान की आंखों से
हम तुम्हें तोल रहे हैं
हमारे वर्तमान के तराजू से॥४॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

हमारे वर्तमान की आंखों से दृष्ट
तुम्हारा रूप
बहुत सुन्दर है।
पर सर्वांग सुन्दर कैसे
हो सकता है?
काल की सीमा ने
न जाने कितने चश्में
बदल दिए है
युग की आंखों के॥५॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

किन्तु तुम अपने वर्तमान में
सर्वांग-सुन्दर थे
और कोई भी मनुष्य
अपने युग में ही हो सकता है
सर्वांग सुन्दर
और वही हो सकता है
जो अपनी नब्ज के साथ-साथ
युग की नब्ज को पहचान लेता है॥६॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२०

युगपुरुष! तुमने सूत्रपात किया
नए युग का
नए जीवन का
समानता और न्याय
अनुशासन और एकसूत्रता
इनका जन्म ही
तुम्हारे युग का पहला लक्षण है
मानवीय विकास में
तुम्हारा बहुत बड़ा योग है
हम सब पर
तुम्हारा बहुत बड़ा ऋण है ॥७॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अपने हाथों खड़ा किया हुआ
सपनों का महल
कोई भी तोड़ना नहीं चाहता
अपने हाथों जलाया हुआ
कल्पना का दीप
कोई भी फोड़ना नहीं चाहता
तुम इसलिए महामानव थे कि
तुमने वह सपनों का महल तोड़ डाला।
तुम इसलिए महामानव थे कि
तुमने वह कल्पना का दीप फोड़ डाला।
तुम्हें महल से कोई घृणा नहीं थी
किन्तु महल तभी महल हो सकता है, जब वह
रहने को अवकाश दे।
तुम्हें दीप से कोई घृणा नहीं थी,
किन्तु दीप तभी दीप हो सकता है, जब वह
प्रकाश दे।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

यह ठोस पर्वत भी
प्रतिध्वनि के रोग से आक्रांत है
यह कूए की गहराई भी
प्रतिध्वनि से भ्रांत है
यह स्वच्छ दर्पण भी
प्रतिबिम्ब का कायल है
यह सागर का असीम विस्तार भी
ज्वार से घायल है
तुम इसलिए महामानव थे कि
तुम में प्रतिध्वनि के कीटाणु संक्रांत नहीं हुए।
तुम इसलिए महामानव थे कि
तुम प्रतिबिम्ब के कीटाणुओं से भ्रांत नहीं हुए।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तुम्हारी भाषा में सघन वही है
जो झुक भी सकता है
तुम्हारी भाषा में गहरा वही है
जो रुक भी सकता है
तुम्हारी भाषा में स्वच्छ वही है
जो अपना श्वास लेता है
तुम्हारी भाषा में विस्तार वही है
जो कटुता में मिठास भर देता है
आकाश इसीलिए सत्य है कि
उसकी कोई छाया नहीं है
धूप और छाया उसी में होती है, पर
वह उनके प्रभाव में कभी आया नहीं है
महामानव!
तुम मूल थे, इसीलिए तुम्हारा सब कुछ
मूल ही मूल है।
तुलसी को कोई तुम्हारी छाया कहे तो
वह सबसे बड़ी भूल है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२१

देव तुम्हारे सपनों का
संसार आज यथार्थ हो रहा
कुछ फल पके और कुछ पकने को
कुछ का युग बीज बो रहा
आसाढ़ी पूनम की ज्योत्स्ना
नभ से भू को चूम रही थी
उच्चावच पर्वतमालाओं पर
हरियाली झूम रही थी
उसी कल्पना ललित परिस्थिति में
तुमने था सपना देखा
वृक्ष अतल में मूल छू रहा
तल को गहरी -गहरी रेखा
आज वही सिद्धांत विश्व के
कण-कण में चरितार्थ हो रहा॥१॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

शाखा की फिर कोई शाखा
इसका मतलब मूल नहीं है
मूल शून्य शाखा की सत्ता की
स्वीकृति क्या भूल नहीं है ?
तुमने ऐसा सपना देखा
शाखा तरु से भिन्न नहीं है
एक मूल का अभिसिंचन पा
कोई किंचित् खिन्न नहीं है
आज वही सिद्धांत विश्व के
कण-कण में चरितार्थ हो रहा ॥२॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

पथरीली धरती पर तुमने
सपना देखा भूतल सम है
आगे पीछे बढ़ना हटना
मति कागति का निश्चित क्रम है
तुमने देखा शून्य दिशा में
भूमि गगन है पास आ रहे
भूमि भूमि है गगन गगन है
स्वयं स्वयं के गीत गा रहे
आज वही सिद्धांत विश्व के
कण-कण में चरितार्थ हो रहा॥३॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तुमन देखा मृन्मय दीपक
दीप-शिखा से भिन्न हो रहा
तुमने देखा बीज भूमि में
छिप अपना अस्तित्व खो रहा
तुमने देखा मुक्त विहग है
आयस-पंजर टूट रहा है
तुमने देखा बद्ध-मनुज अब
नाग-पाश से छूट रहा है
आज वही सिद्धांत विश्व के
कण-कण में चरितार्थ हो रहा॥४॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

भले तुम्हारे पथ की काया
सीमित हो पर साफ सरल है
भले तुम्हारे तरु की छाया
सीमित हो पर घन शीतल है
किन्तु तुम्हारी पुण्य चेतना
युग प्रतिनिधि में आज प्राप्त है।
नहीं जानते तुम्हें उन्हीं में भी
देखा वह तंत्र व्याप्त है
आज वही सिद्धांत विश्व के
कण-कण में चरितार्थ हो रहा॥५॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२२

कलियुग है तुम कौन यहां
अब फिर सतयुग को लाने वाले
वह बीत गया मैं जीत गया
अब मेरा ही बस तंत्र चलेगा
इस सांचे में जो कि ढलेगा
वह फूलेगा और फलेगा
मैं क्या सतयुग का अनुयायी
जो उसकी कृति का दोहराऊं
वहां समय पर वर्षा होती
मैं असमय में जल बरसाऊं
पूजा जाता साधु भले हो
अब असाधु को मैं पूजवाऊं
तुम अतीत को गाने वाले॥१॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

क्या सोचा तुमने कि विनय का,
पुनः प्रतिष्ठान हो जग में
मैं स्वतंत्रता का हामी हूं
नया रक्त मेरी रग-रग में
पग-पग पर मैं इसी भाव को
सहलाता हूं बहलाता हूं
मन को अपने परिकर में
मैं धुन का पक्का कहलाता हूं
तुम्हें चाहिए मन वच का सुख,
उससे मेरा वैर रहा है
सतयुग के उन भक्तों में जो,
बात-बात में खैर रहा है।
सह न सकूंगा मैं उनको जो
प्रतिस्रोतों में जाने वाले॥२॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अडिग रहे आचार्य लक्ष्य पर,
उसने अपना वचन निभाया
बरस पड़ा आकाश कष्ट बन,
कांटों का घन जाल बिछाया
लड़े और गए लड़ते ही,
पैर कहीं पर नहीं थमे थे
तपा घोर तप सरिता की
तपती बालू में हुए रमे थे
रुके नहीं वे झुके नहीं
गन्तव्य मार्ग से नहीं मुड़े वे।
पगा हुआ था मानस का मत
कलियुग से जा नहीं जुड़े वे
अपने व्यर्थ प्रयत्नों पर वह
मन ही मन आखिर पछताया
सकुचाता आया मुनि-युग को,
अपने मन का भाव जताया
बढ़े चरण उत्सुक संतों के,
नई प्रेरणा पाने वाले॥३॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रभो! प्रार्थना, सफल हुआ तप
न्याय मार्ग को प्रथित करो अब
जन-जन के अंतर मानस में,
अनुशासन का भाव भरो अब
हमें सौंप दो यह तप का मन,
बुद्धिमान हो और विचक्षण
देव! तुम्हारे इन हाथों से
बने विनय का मार्ग विलक्षण
पा संकेत पराजय का
कलि-युग की भिक्षु युगल के द्वारा
गुण-पूजा का शंख बजा तब,
अनुशासन का मिला सहारा
बदल गया सारा ढांचा अब
हुए उपासक हुए भिक्षुवर
कालकूट से जो लगते थे,
वही हो गये मधुर इक्षुवर
जीवन को सरसाने वाले॥४॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तेरापंथ संघ रचना का,
यह इतिहास महान् समुज्ज्वल
सदा रहा है इसके पीछे,
क्षमा नीति-तप संयम का बल
संबल देते रहते है
आचार्य सतत साधक को पोषक
आपस में सब भाई-भाई,
नहीं कहीं शोषित या शोषक
प्रेम पुलक आचार-भित्ति पर
अनुशासन है और विनय है
और अकिंचनता का आग्रह
कलियुग पर यह महाविजय है।
मानस को उलझाने वाले॥५॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२३

यु. मु.— आर्य! रुद्ध हो रहा है
सरिता का कलरव
मौन हो रहा है निर्झर
रुक रहा है प्राण
न जाने क्यों बादल भी
स्थिर होकर खड़े हैं
गगन के प्रांगण में
निरंतर गतिशील
तुम्हारे पैर भी ठिठक गए हैं
निराशा के कुहासे में

आ. भि.— सब गतिशील हैं
अपनी-अपनी दिशा में
मैं अपने लिए चलता हूं
क्या दूसरों के लिए
चलना ही चलना है?
क्या दूसरों के लिए
जलना ही जलना है?

आ. भि.—आचार्य भिक्षु
यु. मु.—थिरपाल फतेचंद

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

यु. मु.— क्या कोई पेड़ कह सकता है
मैं अपने लिए फलता हूं?
क्या कोई दीप कह सकता है
मैं अपने लिए जलता हूं
फलने वाला दूसरों को
फल देकर ही कृतार्थ होता है।
जलने वाला दूसरों को
प्रकाश देकर ही यथार्थ होता है।

आ. भि.— क्या जंगल के पेड़
फल कर ही कृतार्थ नहीं होते हैं?
अनंत आकाशी दीप
क्या जलकर ही यथार्थ नहीं होते हैं?
दूसरों के लिए होना ही कृतार्थता है
तो क्या अस्तित्व अपने आप में व्यर्थ है?

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

यु. मु.– अस्तित्व अस्तित्व है
उसके अंचल में
उत्पन्न ही नहीं है
व्यर्थ और अव्यर्थ जैसे शब्द
ये उत्पन्न होते है
उसकी अभिव्यक्ति के अंचल में।
आ. भि.– क्या अभिव्यक्त होना ही सार्थकता है?
कितने-कितने परमाणु
शक्ति को समेटे हुए पड़े हैं
इस अनंत के गह्वर में।
क्या उनका होना होना नहीं है?
क्या वे अपने आप में कृतार्थ नहीं है?
यु. मु.– होना ही सार्थकता है
तो हम सब हैं
फिर किसलिए यह साधना?
किसलिए आराधना?
किसलिए दीक्षा?
और किसलिए तितिक्षा?
यह सब अस्तित्व को
अभिव्यक्त और अनावृत
करने के लिए ही तो है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२४

श्रद्धा ने पाया आकार
पावन हो पाया आचार,
मिला सत्य को भी आधार
सजा क्षमा ने नव शृंगार।

स्वयं भटकता था जो ध्येय
और साधना बन अज्ञेय,
बना उन्हें जीवन पाथेय
किया कि झंकृत जीवन तार।

मिला धर्म को ज्योतिधर दूत
संघ शक्ति को मिला सपूत,
और साध्य को साधन पूत
जिन वाणी को व्याख्याकार।

अंग भंग कर हुआ अनंग
सुनता ही आया जो व्यंग,
हुआ वही आदर्श सुरंग
बनकर जीवन का व्यवहार।

वाणी और कर्म का भेद
जिसे देख हो आया स्वेद,
भीग गए सरिता के कूल
फूट पड़ा मानस का प्यार।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२५

थे तरंगित सात सागर
स्थिर नहीं आकाश भी था,
कांपता था भूमि का तल
हृदय में नहीं सांस भी था।

स्वापिनी का दौर था इस
छोर से उस छोर सारे
मोहिनी पुद्गल छटा से
मुग्ध थे दोनों किनारे।

आर के आकर्षणों ने
पार को था जो भुलाया,
जानते थे आंख खोले
हन्त उसको भी भुलाया।

विरति अविरति की दिशाएं
हन्त मिलने जा रही थी,
मोक्ष को संसार की
सरिता बहा ले जा रही थी।

धैर्य बन-बन जागरण पी
घूंट कड़वी भिक्षु आया,
विघ्न बन-दिग् मिलन का तब
मोक्ष ने अवलम्बन पाया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२६

स्वामिन् राह बता रे
'मार्ग दिश मार्ग दिश' की ध्वनि
अन्तर की सुन पा रे
पथ उत्पथ सा लगता जिनको उनको कुछ समझा रे।
तूने ही तो समझाई थी धर्म मर्म की वाणी
तुम से ही तो एक-'आत्मौपम्यं' समझ सका था प्राणी
प्राणी प्राणी की वह समता आगे और बढ़ा रे॥
ऊंच नीच के भेद भाव को था तुमने तब तोला
पहन रखा था जबकि न्याय के चन्द बड़ों का चोला
कौन व्यथा सुनता होठों की अन्तर दाह बुझा रे॥
तुमसे मूक उपेक्षा पाते अर्थी कि इसका होगा
नहीं मिलेगी तुम्हें बड़ों से करनी सा फल होगा
बहुत कहा तूने थोड़े में सफल हुई प्रतिभा रे॥
जो कुछ तूने थोड़े में अंतर दृष्टि सहारे
इसीलिए तुमको कहती है बहिर् दृष्टि दुनिया रे
महावीर के तुम विरोधी जिन पर प्राण उबारे॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२७

प्राण! तुम्हारी मंथर गति है तो भी तुम चलते जाओ।
महाप्रभू में लय हो मेरे मन के भाव सुना आओ॥
देव तुम्हारे जीवन को जब पढ़ना मैंने शुरू किया था।
पंडित बनने का सुंदर सा अवसर मैंने झांक लिया था॥
कुछ कुछ आगे बढ़ा मुड़ा फिर अनुभव पाया विद्यार्थी हूं।
बढ़ी उलझने बढ़ी कठिनता, अब सुलझाने का अर्थी हूं॥
किस दुनियां में तुम जन्मे थे, किन अणुओं से गात बना था।
इंद्रिय रचना कहां हुई, किस धातुव्यूह से चित्त बना था॥
नहीं भीड़ की रखी अपेक्षा, आध्यात्मिकता के उस तल में।
पहुंच गए फिर देख न पाए, दुनिया को उसकी हलचल में॥
कष्ट भयंकर सम्मुख आए, नहीं कभी उनसे घबराए।
वे शारीरिक अणु संजीवित, नहीं कष्ट अनुभव कर पाए॥
आंखे देख सकी थी अवगुण, कैसी थी, वह तारा।
निंदा सुन सकते थे हंस हंस, थी कैसी वह मानसधारा॥
किस अतल भूतल अंतर में, पैर तुम्हारे जमे हुए थे।
किस अदृश्य नभस्तल उर में, नयन तुम्हारे रमे हुए थे॥
उखड़ न पाए संघर्षों से, भूचालों से दुश्चालों से।
चुंधियाए ना नयन कहीं भी, चकमक जग के मतवालों से॥
अन्तर्ज्योति जगी फिर कैसी, निंदास्तुति सौ सुख दुःख कैसा।
गुत्थी सुलझ गई इतने में तिमिर मिटा फिर बंधन कैसा॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२८

१. सूर्य तू होता नहीं तो तिमिर भी होता नहीं
आलोक के सद्भाव में अस्तित्व भी खोता नहीं
वर्ण तुम होते नहीं तो मूर्ख फिर मिलते नहीं
भिक्षु तुम होते नहीं न असाधु भी मिलते कहीं
२. वर्णमाला में प्रमुख जैसे स्वरों का स्थान है
संघ तेरापंथ में आचार्य का सम्मान है
भाव की अभिव्यक्ति में भाषा यथा अनिवार्य है
भिक्षु की नियमावली तद्वत् यहां व्यवहार्य है
३. मरुधरा के रत्न तुझसे कार्य का प्रारंभ है।
मरुधरा का रत्न ही तो मध्य का आलंब है
मरुधरा का रत्न ही तो पूर्ति का संलग्न है
मरुधरे! तेरे विभव से हर्ष से तू मग्न है।
४. खान-पान नहीं तुझे है याद आता इसलिए
हाँ जरूरत के बिना संचय कर फिर किसलिए
तत्त्व की अनभिज्ञता से मरुधरा कहते तुझे
रत्नगर्भे! मरुधरे! मा! खेद है इसका मुझे
५. वत्स! खेदं मा कुरु त्वं! देखता जा तू अभी
मरुधरा के नाम से क्या खेद हो सकता कभी
रत्न मेरा रत्न होगा शीघ्र विश्व किरीट का
रत्न गर्भाएं बनेंगी मरुधरा की पीठिका।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२९

एकता का मूल सूत्र शक्ति का है एक केन्द्र।
एक गुरु में सर्व सत्ता रूप उसका है विकेन्द्र॥१॥
एक कर सकता नहीं सब कुछ अतः संघ में बिखेर।
शक्ति को लो भक्ति बदले, सफलता का यह सुभेर॥२॥
संत दो दो साध्वियां दो पुस्तकें दो कार्य भार।
और दो सब जो कि देना, दो न सब सर्वाधिकार॥३॥
भेद रुचि का है अनन्त और चिंतन का न अंत।
किन्तु जो गति ले सितार, झनझनाए तार॥४॥
किन्तु वैसा हो न मोह एक का आभार मान।
साधु के आचार की दे, शिथिलता में योगदान॥५॥
हो न आग्रह भाव वैसा, पच न पाए नव्य सत्य।
रूढ़ि की तो शरण जीवित, क्यों छिपाया जाम तथ्य॥६॥
बहुश्रुति मिल चर्च लो, फिर भी न जो निकले निचोड़।
केवली गम्य कहो, गुरुवचन मानो हाथ जोड़॥७॥
हो न गुरु पर जब कि श्रद्धा तो न गुरु मानो बलात्।
तार श्रद्धा का न टूटे, तो न उलझो सरल बात॥८॥
विजय का झंडा लिए फिर विश्व में विचरो सुखेन।
भिक्षु गण की एकता को, भिक्षु की यह अमर देन॥९॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३०

ये महापुरुष जो होते हैं वे दुनिया से उल्टे चलते हैं,
नहीं पता फिर भी क्यों उनके पदचिह्नों पर हम चलते हैं?
गरल पान कर प्रवर सुधा के वे उद्‌गार लिया करते हैं,
सत्य खोजने वाले ही तो व्यत्यय बहुत किया करते हैं॥१॥
कड़वे बोलों को सुनकर वे मन में आनंदित होते हैं,
अचरज है वे समझदार जनता से अभिवंदित होते हैं॥२॥
शत्रु-मित्र को एक दृष्टि से प्रतिपल वे देखा करते हैं,
वे ही जग की सत्य दृष्टि का बार-बार लेखा करते हैं॥३॥
गंध भरे स्थानों में उनको परिमल का अनुभव होता है,
बहुत विपर्यय करने वालों के कर में वैभव होता है॥४॥
वे प्रहार में उपहारों का स्पर्श सुकोमल सा पाते हैं,
क्षीर-नीर विवेक बुद्धि की गाथाएं वे ही गाते हैं॥५॥
कष्टों का रच व्यूह विकटतम वे वरदान दिया करते हैं,
फिर भी सुख को चाहने वाले, उनका नाम लिया करते हैं॥६॥
ये महापुरुष जो होते हैं वे क्या जाने कैसे होते हैं,
नही मिला अपमान कहीं कुछ वे कि नहीं जैसे होते हैं॥७॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३१

सत्य मूर्त कब होता।
जीवन में वह रहता फिर भी, उनसे मुग्ध न होता।
आत्मद्रष्टा का नयन वह, नय में नयन पिरोता॥
प्रिय-अप्रिय वह नहीं देखता, सुख-दुःख भान न होता।
चिकनी चुपड़ी बातों में वह नहीं लगाता गोता।
श्लाघा पूजा का जो भूखा, उससे वह समझौता॥
कभी नहीं करता पावक में घुल मिलकर पग धोता॥
'हां' में हां वह नहीं जानता, दोष यही बस होता।
परदे में रहने वाला वह, उसका विघटक होता॥
बिना हृदय परिवर्तन के फिर, दोष क्षीण कब होता।
अग्नि संतापित सलिल भी, अग्नि मित्र कब होता॥
लक्ष्य चरम यदि संत भिक्षु का, सत्यशोध न होता।
तो अनुशासन संगठन में, यह जीवन कब होता॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३२

चरम दिन कैसे मनाऊं ?

चरमता के अर्थ तक मैं चहता हूँ पहूँच जाऊँ।
आज भी तुम बोलते हो, लिखत में साकार होकर।
एकता का उच्च स्वर ले, साधना की भूमिका पर॥१॥
द्वैत में अद्वैत ला, अद्वैत में जो द्वैत साधा।
ओ तुम्हारी अमरता की, है अमर वह प्राण गाथा॥२॥
आचरण की शिथिलता पर, जो किया तीखा प्रहार।
आज भी उस नोक में है, हृदय द्रष्टा की पुकार॥३॥
प्रेम का आदर्श अब भी, स्फटिक से है अधिक शुद्ध।
मंडनात्मक नीति का भी, चल रहा है घोर युद्ध॥४॥
कष्ट सहना लक्ष्य हो यह, हो रहा है स्थूल स्थूल।
स्रोत में ही वह न जाता, हो रहा है मंत्र मूल॥५॥
व्यक्ति की पूजा न हो, हो अर्चना जो अर्चनीय।
सगुण पूजा वह जगत् में, हो रही है श्लाघनीय॥६॥
मृत्यु से जीवन मिला तब, मृत्यु की क्या कल्पना हो।
मृत्यु के इस चरम दिन की, अमरता में जल्पना हो॥७॥
अब न मर सकते कहीं तुम, मृत्यु तुम से मर चुकी है।
अचरमोत्सव मैं मनाऊं, चाहता हूं पहुंच जाऊं॥८॥
चरम दिन कैसे मनाऊं ?॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३३

नमस्कार हे संत तुम्हारे, शब्दों में कोई चमत्कार है।
नमस्कार हे संत तुम्हारे कहने का कोई नया प्रकार है॥१॥

क्षमा किया तुमने दोषी को, दोषों पर तीखा प्रहार है।
उबलते गरल के कुण्डों में, बहाई सुधा की अमिट धार है॥२॥

पुरस्कृत हुई है एकता फिर, कलह का हुआ तिरस्कार है।
अनुशासन की चोटों में भी, सेवा का मधु भरा प्यार है॥३॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

बोलता विश्वास है मन का, हर जगह अंतर की ही पुकार है।
रीढ़ टूटती है रूढ़ियों की, बुद्धिवाद का परिष्कार है॥४॥

खोलते है ग्रंथियों को, बंधनों का मुक्ति द्वार है।
अभय के आलोक-पथ में, दीखता जो आर-पार है॥५॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकीर्ण

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३४

छापर तेरा सिर ऊंचा है, ऊंचा बना रहेगा।
कालू की तू जन्म भूमि है, युग युग कीर्ति कहेगा।

तेरापंथ के अंश अंश में, जिन शासन के पृष्ठ वंश में
कालू का उपकार भरा है, उपवन सारा हरा भरा है
किस कठिनाई से गुजरा है, युग जब कथा कहेगा॥१॥

साधु वर्ग था तेरापथ का, संस्कृत-प्राकृत का उत्सुक तब
किन्तु उसे था ज्ञान पढ़ाना, विषधर को ही दूध पिलाना
पंडितगण ने था यों माना, युग जब कथा कहेगा ॥२॥

ज्ञान बटोर अल्प काल में, साधु संघ ने एक ताल में
नर-नारी का भेद नहीं है, उचित क्षेत्र की कमी नहीं है
आज अपेक्षा कहीं नहीं है, युग जब कथा कहेगा॥३॥

इस विद्वद्गण का निर्माता, श्री कालू था भाग्य विधाता
आज समृद्ध समृद्ध स्वरों से, श्री तुलसी के कुशल करों से
पावन पुलकित स्मित अधरों में, युग जब कथा कहेगा॥४॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३५

ओ हंस! चले तुम तीर-तीर
यह नीर नीर तुम क्षीर-क्षीर।
है एक ओर यह पीर-पीर
तुम चले पीर को चीर-चीर॥१॥

ओ वृषभ! तुम्हारे सेवकत्व
पर होता सब को ममत्व।
ओ घोरतपस्वी प्रवरसत्त्व
तुमने पाया सब से निजत्व॥२॥

ओ भैक्ष शासन के सपूत
कालू के शिष्य सुधा प्रसूत।
तुलसी चरणों में पुण्य-पूत
हो सफल तुम्हारा लक्ष्य-दूत॥३॥

तुम मगन रहे नित मगन पास
सेवा की वह जो अमिट प्यास।
है अनुकरणीय महा-प्रयास
फैले उसकी सब में सुवास॥४॥

घोरतपस्वी मुनिश्री सुखलालजी के सम्मुख मृत्यु के तीन दिन पूर्व पठित

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३६

समर्पण के दर्पण में देखा
तो दिखा-तुम तुम नहीं हो
और मैं मैं नहीं हूं।
आकाश गूंज उठा—
'बस यही तेरापंथ है।'
नदी का तट बोल उठा—
'बस यही मेरापंथ है।'

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३७

मर्यादा वह नहीं
जिससे मान की गांठें घुलें
और बाहर की आंखें खुलें।
मर्यादा वह है
जिससे बाहर सब घुलें
और
मन की गांठें खुलें

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३८

व्यक्ति की नवशक्ति से ही संघ बस विस्तार पाता
और युग युग तक सनातन व्यक्ति का ही गीत गाता।
संघ कुछ ही व्यक्तियों की
साधना का रूप होता।
और गतिमय सलिल का वह
मार्ग ही तो कूप होता।
कूप का क्या मूल्य है जब
स्रोत का पथ बदल जाता॥१॥

तेज होता व्यक्ति में वह
संघ में ही व्यक्त होता।
शक्ति होती व्यक्ति में वह
संघ से ही शक्त होता।
सत्य है सापेक्ष इसको
सत्य ही बस जान पाता॥२॥

व्यक्ति का व्यक्तित्व ही जब
संघ का नव-प्राण बनता।
व्यक्ति का अनुदान ही तब
संघ का समुदान बनता।
संघ में है व्यक्ति उसमें
संघ अभिनव रूप पाता॥३॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३९

अपद को पूजो
होगा सदा बसंत
दोनों आंखों से देखो
होगा यौवन अनंत।
पूजा का रोग
देखे न इसके द्वार
वैमनस्य का बुढ़ापा
जाए क्षितिज के पार।
शांत रहे अहं का पित्त
कुपित न हो आग्रह की वायु
संघ पुरुष हो चिरायु।
संघ-पुरुष हो चिरायु।
सूरज चांद-सी हो
उसकी आयु।
एकता के अणुओं से
बना है इसका शरीर
वे उतने ही थे
गंगा जैसा गंगा का
ही नीर
अध्यात्म के रक्त से
सिंचित हो
इसका हर स्नायु
संघ-पुरुष हो चिरायु।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४०

तेरापंथ के भाग्य पटल पर, लिखा गया था लेख महान्।
उसकी स्मृति में पुलक पुलक हम, गाएं शत शत मंगलगान॥
संघे शक्तिः कलौ युगे यह सम्मुख अविचल लक्ष्य बना।
वीर वीर के मंत्र जाप से वीर वृत्ति से हृदय सना॥
प्रेम गोंद से उस स्याही ने पाली थी वह मजबूती।
जिसके सुनहरे वर्णों में, उलझी मानो रजपूती॥
टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं ने टेढ़ाई का अंत किया।
विष विष की औषध बनता है, फिर जग ने यह जान लिया॥
न्याय नीति की पुट देकर के, जीवन उसका अमर किया।
कोमल शब्दों में स्वामी ने, वैभव का संचार किया॥
जब तक नीति विशुद्ध रहेगी, तब तक अटल रहेगा संघ।
नीति निपुणता से ही हममें, खिला हुआ है अद्भुत रंग॥
साधु-साध्वियों की दृढ़ निष्ठा, संयम के अनुशीलन में।
नीति संघपति की उत्तमतम, प्रतिबिम्बत अंतर्मन में।
उभय नीति के सम्मिश्रण से, एक प्रीति का जन्म हुआ।
संघर्षों के युग में देखो, विजयी तेरापंथ हुआ॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

राजस्थानी

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४१

अनेकांत रा अनुयायी वै प्रतिस्रोत में चाल्या।
कांटा री पगडंडी ऊपर संभल-संभल कर हाल्या॥
दो न्यारा[१] नै भेलो करग्या दो भेलां[२] ने न्यारा।
बढ़तां रा रस्ता[३] जा रोक्या घटता[४] रा रखवारा॥
साधपणों साधां स्यूं न्यारो, क्रिया ज्ञान स्यूं न्यारी।
विरताविरत संसार मोखरी बणगी एक ही क्यारी॥
बढ्यो मोल चेलां रो सारे, संख्या वां री घटगी।
घट्ग्यो मोल गुरां रो वां री संख्या भारी बढ़गी॥
घटी साधना झगड़ा बढ़ग्या, संगठन भी घटग्या।
सम्प्रदाय री बढ़ती में तो, काम घणां रा पटग्या॥
जाग्योड़ां नै फैर जगाया, आख्यां अंजण घाल्या।
अनंकांत रा अनुयायी वै प्रतिस्रोत में चाल्या॥

---

१. साधु-साधपणो
विचार-आचार
२. अविरति-विरति
संसार-मोक्ष
३. झगड़ा-सम्प्रदाय, गुरु
४. साधना, चेला

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४२

वीर की बान पै आन डट्यो न हट्यो जदि कष्ट को पाड़ भी टूट्यो।
सत्य की खोज में मोज बणी, जद देह कै नेह स्यूं लक्ष्य न छूट्यो।
शांति-समाधि स्यूं पूर्ण भर्यो घट, भ्रांति की चोट स्युं वो नहीं फूट्यो।
जीभ को स्वाद न याद रह्यो, तब जीवन में रस ही रस लूट्यो।
बीत गया जलता जुग का जुग आज लो दीप बण्यो न दिवाकर
बीत गया फिरता जुग का जुग, आज लो ताल बण्यो न सुधाकर।
बीत गया भरता जुग का जुग, आज लो ताल बण्यो नहिं आगर।
सीम को तोड़ असीम करो अब, गागर को करद्यो तुम सागर॥
स्थूल से सूक्ष्म की ओर चले तुम, लो प्रतिभा यह सूक्ष्म बनाओ,
शूल से फूल की ओर चले तुम, तो ऋतुराज इसे सरसाओ।
भूल से कूल की ओर चले तुम, पार वही मुझको दिखलाओ।
गागर सागर हो नहिं हो, पर गागर में अब सागर आओ॥
होवै जरूरत मक्खन की जद फाड़नो के नहिं दूध पड़ै है,
रत्न जड़ै जद आग की आंच मै, गालणो के नहिं स्वर्ण पड़ै है
बोत बड़ै हित खातिर के नहिं, छोड़णो छोटो सो स्वार्थ पड़ै है।
साच को मार दे ताण की बाण आ पंडित वो जग जो न अड़ै है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४३

फूलां रै कोमल तागै स्यूं, मिनखां रा माथा बांधग्यो।
ल्यो बिना गूंद रे चेपे स्यूं ही वो सारा रा दिल सांधग्यो॥१॥
वो करडो हो वो करडो हो, पत्थर सो दिल न पसीज्यो हो।
रीज्यो हो वो आचारी पर वो दुराचार पर खीज्यो हो॥२॥
वो चिणा लोह रा चाबणियो रग रग भगती में भीज्यो हो।
वो हो आगी स्यूं खेलणियो, वो नहीं बाफ में सीज्यो हो॥३॥
वो चाल्यो चालण रे तांई, नां पंथ चलाणो चावै हो।
ओ चाल पड्यो उण रे तप स्यूं, वो कद मन नै सहलावै हो॥४॥
वो खोजी हो मनमोजी हो, वो मौत सिराणै धर चाल्यो।
भूकंपां और भतूल्यां स्यूं, वो रंचमात्र कोनी हाल्यो॥५॥
कोनी हाल्यो कोनी हाल्यो वो दुनियां स्यूं उल्टो चाल्यो।
ज्यूं चाल्यो ज्यूं मारग घाल्यो सुण सुण किणरो नहिं सिर हाल्यो॥६॥
उणरी करणी रो ओ फल है, तुलसी सा आचारज मिलग्या।
आं नींव इसी मजबूत बणी अै मन चाया पासा ढल्या॥७॥
ठंडो उन्हों हो जावे है ओ रूप बदल कर आवै है।
उबकै बरसै करसै वाणी पण सारो आग बुझावै है॥८॥
चालां आपां सारा चालां इण रा इंगत लेकर चालां।
मरजादा मोछब रे दिणरी, परतिज्ञा आ अब उजवालां॥९॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४४

सृष्टि री रचना सारी भीखण री याद दिरावै है।
के याद करां आपां उणने वो भूल्यो ही कद जावै है॥
जीणै री ममता कोनी ही, मरण रो डर कोनी लाग्यो।
रोट्यांरी बात करो कांई आतम रो सोयो तप जाग्यो॥
बालू रा कणियां बलबलता नदियां री छाती झलहलती।
भोभर सी किरणां सूरज री, लूआं री खोल्यां हलफलती॥
रोही रे रूखां री छायां छतर्यां ज्यूं घोर मसाणां री।
चरचा में मार घुम्मक्कां री, चोटां बोली रे बाणां री॥
आ तावड़ली बण मावड़ली, सारा ही रोग मिटावण नै।
आई ही डिगती-विरिया में वा कड़वी घूंट पिलावण नै॥
वां सबां री मीठी बोली कानां नै अब स्हैलावै है।।१॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

उण स्हैणसीलता भूमि री पाणी री निरमलता लेली।
आगी रो तेज अपार वर्यो वायु री ऊंचाई झेली।
पाली रुंखा री शीतलता पांचां री पूरी पख साधी
थावर जीवां री हिंसा रै प्रतिपख में एक उठी आंधी।
मरणो जग में के खोटो है यूं छतर्यां री भी बात रही
है पंडित रो मरणो आछो आ वीर प्रभु री साख रही।
कै गाल करै के मार करै, कै रोग करै इण आलम रो।
यों जैर जैर रो नाश करै जब शरणो है परमातम रो।
अंतर रा मल सब धुप ज्यावै यूं सारा संत बतावै है॥२॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

लोगां री आ रचना सारी भीखण री याद दिरावै है।
के याद करां आपां उणने, वो भूल्यो ही कद जावै है।
ओ वीर प्रभु री वाणी रो, उत्थापणियो (यूं) कैवण लाग्या
आचरणां में यों ढीलो है सौ सत्तावन दूषण जाग्या।
खाणै पीणै री कमजोरी चरचा में कई घूम गया
पख राखै है ओ मोटां री इस अरचा में कै झूम गया
उण वीर पुरुष रे जीवण री, झांकी पाणै रो कष्ट कर्‌या
अै थोथी बातां उड़ जाती पण आब चढ़ै है रंग भर्‌या।
है कांट छांट स्यूं कै डरणो सोनो आगी में न्हावै है॥३॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तुलसी री आ रचना सारी भीखण री याद दिरावै है।
कै याद करां आपां उणनै, वो भूल्यों ही कद ज्यावै है।
जाणो थे जुग निरमातारी कठिनायां रो कै पार हुवै।
ओ एक बार तो दुसमण सो खारो सारो संसार हुवै।
फल लागण लागै मीठा सा, जद अनुराग्यां री बाढ़ बणै।
इमरत रो सागर उमड़ पड़ै कीरत रा मोटा महल चिणै
सिद्धांता रै खातिर लड़णो सुख सुविधा रो कै प्रश्न उठै।
आचरणां री शुद्धि करणी संघरसां में ही जो मनुज घुटै।
उण जोती री चिण-गारी ही, दुनियां री नींद उड़ावै है॥४॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४८

जय करणी थारी जीत जीत, जय जय हे थारी रीत-नीत।
तूं गयो जमारो जीत जीत, तूं हुयो अमर नवनीत नीत॥१॥
तूं अमर साधना छोड़ गयो वा साहित और कला संगीत।
जिण आगम रो रस दू-दू कर, तूं खूब पियो यूं अलख प्रीत॥२॥
तूं स्रोत प्रेरणा रो बणग्यो, जीणै री दिश सौ मुंह चाली
जो भटक्योडी ही भूल्योडी वां गांयां ने रस्ते घाली॥३॥
तूं पडत पुराणी देख, देख ओ लिखणो चोखो सीख गयो।
लिखता वे भी हा न मिनख यूं मिनख मिनख नै दीख गयो॥४॥
संस्कृत सीखी इक लड़कै स्यूं, ली राग-रागण्या ढ़ोल्यां स्यूं।
आ ज्ञान ग्रहण री उत्कंठा, जागै है हिरदो खोल्या स्यूं॥५॥
सुण राती जोगा रा गीत-गाण धार्‌या ततखण दिल प्रीत आण।
जुम्मेरा सुणकर चरित गीत, जोड्‌या निश निश में बखाण॥६॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

'स्पर्धया वर्धते कला' आलीक नहीं अब लीक रही।
किमसाध्यं पुरुषार्थिजनैः आ सोलह आना बात सही॥७॥
'अमेध्यादपि काञ्चन' आ कावत तूं साची करग्यो।
विद्या ग्राह्या शिशोरपि' इन में तूं जान नई भरग्यो॥८॥
थारी मरजादा रे कारण, ई संगठन रो मोल बढ्यो।
पोथी पाना आचारज रा, जिण दिन स्यूं ही ओ सूत्र कढ्यो॥९॥
है ज्ञान प्रज्ञ्यां रे आश्रित ही, पड़तां री आवै नहीं कमी।
अगवाण्यां रे सिर कर लगा, आ पिण कर दी दिल जमी॥१०॥
रंगणे सीणे पर रंग लगा, लिखणै रो संचो ढाल्यो।
है गाथा साटे काम-काज, यूं पिण उण में जीवन घाल्यो॥११॥
जो छोड़ छाड़ धन-धान माल अपरिग्रह रा व्रती बण्या।
अचरज, वै थारै सासण में, आ पाछा गाथापति बण्या॥१२॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

पांती रो परचार कर्‌यो तूं समता रो बोयो सफल बीज।
तेरापंथ री साम्य व्यवस्था, आज बणी है एक चीज॥१३॥
समता समता नै ल्यावै और बीज विषमता बोयां।
फल लागै जरां विषमता रो, के बणै धूल में पग धोयां॥१४॥
है दिया रात नै बोत जलै, पण जल जल कर वै बुझ ज्यावै।
है दिया किता वै लारै पण जो जोत आपरी रख पावै॥१५॥
तूं अमिट दियो लाखां दीपक, जाल्या बाली नां फिर बाती।
तूं छोड़ दियो अणमाप तेज जो आज अमोल बणी थाती॥१६॥
तूं सूरज बण नहिं चमक्यो हो सूरज री खोटी एक बाण।
ढक कर सारै कुणबै नै वो चमकै सारे एक दाण॥१७॥
तूं चमक्यो हो पण चमक्यो हो उणरै लारै सैल संघ।
तूं चमक एकलो ही चावै, ओ वैर बढ़ण रा है प्रसंग॥१८॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य भिक्षु
(कवित्त छंद)

(१)

कंटालिय नाम ग्राम भयो अवतार तार
दिये नर नार कीर्ति कौन नहीं कहै गो।
वाक्य मरन्द पान भविक मलिन्द करी,
छत्रछायां मांह सदा रहणो हि चहै गो।
नाम अभिराम राम नाम ज्यों समारै काम,
रटै अष्टयाम वो तो कष्ट नहीं लहै गो।
भनै नत्थमल्ल भिक्षु आप तो पधारे स्वर्ग,
नाम तो सदा ही जग जीवतो ही रहै गो।।

(२)

सत्तावीश पाट भये शुद्ध वर्धमान लार,
पीछै केक मानी माया ममता में झुलग्या।
प्रगटे मुनीन्द तब भिक्षु अनमाप आब,
अनगिन लोग भव सागर मै रुलग्या।
सह के अपार कष्ट करके प्रकाश नव्य,
धर्म को जिहान आदि जिनन्द से तुलग्या।
भनै नथमल्ल एक भिक्षु के प्रताप से ही,
लाखां आदम्यां का एक साथ भाग्य खुलग्या।।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(३)

देख भिक्षु भारीमाल गुरु शिष्य धर्म प्रीत,
वीर अरू गोतम को संबंध निहालसी।
शिक्षा सुविशाल हार्द अंतिम समै की अहा,
कौन नर जातहुको हियो ना पिघालसी।
वज्रमय नींव जैन शासन संगठन की,
देख देख माथो कहो किणरो न हालसी।
भन्नै नत्थमल्ल भिक्षु स्वाम को जमायो यह
सदा ही सवायो एक डंडी राज चाल सी॥

(४)

एक सेर ठाम मांहीं रांध्यो नहीं सवा सेर,
एक सेर ठाम मांहीं एक सेर रांधग्यो।
थूक को दे चेपो नहीं मंदिर विशाल सांध्यो,
वज्रमयी मृत्तिका से मंदिर को सांधग्यो।
टाटी पर तीन खण चिणग्यो न बुद्ध तत्त्व,
भींत मजबूतहुपे गेह, अन सांधग्यो।
भनै नत्थमल्ल पाणी आयां नहीं बांधी पाल
भिक्षु स्वाम पाणी आयां पैली पाल बांधग्यो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(५)

अंधारी ओरी में कर्‌यो प्रथम चोमासवास,
ताको खास एक ओही कारण सुहावणो।
शत्रु को विनाश जब करनो सहास पड़ै,
लो प्रथम घरेलु भेद ध्यान बीच लावणो।
करनो हो नाश मिथ्या तम को विश्वास पूर्व,
लेन गृह भेद भयो तिमिर में जावणो।
भनै नत्थमल्ल उक्त नीति को विमास भयो,
भिक्षु दिनकार अंधकार घर पावणो ॥

(६)

आदि को विधान आदिनाथ को सुजान गह्यो,
कष्ट अनपार होत आदि कै प्रचार मै।
मल्लि को निहार नृप बोध को प्रकार कर्‌यो,
चित्रित दृष्टांत अवतार सुविचार मै।
दोष के प्रकाश में विकास सत्यता को झांक
पार्श्व को प्रमाण आत चक्षु कै विहार मै।
भनै नत्थमल्ल भिक्षु शांति की पुनीत रीत
वीर की सप्रीतधारी धर्म कै सुधार मै॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(इन्दव छंद)

(७)

काम अमान करै किम एक ही संशय मानस में यह छायो।
सोचत-सोचत एक रहस्य जिनागम उक्त सुयुक्त मैं पायो।
वस्तु के धर्म अनंत हुवै सब ही सब आपको काम संभायो।
एक कहो यह साझ अनंत को पायके काम करै मनभायो।

(८)

थावर पंच मिली इम सोचत है गुरु को उपकार यो कैसो।
आप न मारत नाहिं मरावत नां अनुमोदत रक्षक एसो।
है मिलणो मुसकिल्ल धणो नहिं लेत जगत कै नाम को पैसो।
लोभ को तोल व लेश नहिं मिल्यो मालक मालक चाहिजै जैसो ॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(९)

प्राण जाये यदि जावण दो परवाह नहीं कुछ प्राणतणी है।
प्राण मिले बहु वार मुझे पर, चित्त में सत्य की चाह घणी है।
बात नहीं कछु सोचन की यदि काच को नाश मिलंत मणी है।
सत्य कै आश्रय कष्ट परें चहैं तो पिण मो मण मोज वणी है।।

(१०)

खाय कै भोजन स्वाद सदा यह पी न हो गात या वात नां भावै।
ओढ़ के वस्त्र अमूल्य अनेक सझें तन याभि मुझे न सुहावै।
बैठ नितान्त महालय मै लय मै मन मग्न हो मोज उडावै।
चाह नहीं यह भी दिल में सगली दुनिया मुझके गुण गावै ॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(११)

हो कृश गात्र न सोच कछु यदि श्री जिन आगम स्वाद को पाऊं।
चाहे मिलो मत वस्त्र मुझे यदि वीर को शासन सीश धराऊं।
छत्रिन के तल वास मिलो यदि वीर को आश्रय प्राप्त हो जाऊं।
गान नहीं गुण को मुझ चाहिए जो भगवंतरा मैं गुण गाऊं॥

(१२)

दुर्गति पंथ निवारण को सच माग गह्या जिन राज का झीणा।
कष्ट सह्या बहु भांत तथा पिव जाई सदा जिन वाणी की वीणा।
नांह करी परवाह कछु वह जाण जिहा न में थोड़ा सा जीणा।
भीखन को धन साहस-चाबग्यो मैण कै दांत स्युं लोह का चीणा॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(कवित्त छन्द)

(१३)

न्याय मार्ग तोलण कूं वीर भगवंत करी
ताकड़ी सुरम्य मजबूत और साढ़ी है।
सम्यक्त चारित्र रूप पालण अनूप दोय,
नीति रूप रज्झु आज्ञा लाकड़ी सुगाढ़ी है।
ताको केई अज्ञ लोक ठीक नां पकड़ सक्या,
काण होण लागी तब भिक्षु नीति चाढ़ी है
भनै नत्थमल्ल और कछु भी न कर्‌यो नव्य,
खाली उण ताकड़ी की काण-काण काढ़ी है॥

(१४)

विप्र एक भीक्खन नें आय कह्यो सूत्र अर्थ,
संस्कृत बिना है महा मुस्किल लगावणा।
पूज्य फरमायो आप-आप को अभ्यास मुख्य,
तो भी नहीं मानै करै आपकी सरावणा।
पूछ्यो तब "कयरे मग्ग मक्खाया" सुपाठ अर्थ,
भनै नत्थमल्ल ध्यान उत्तर में ठावणा।
एसो अद्‌भुत अर्थ कीन्हो पेट दूख चालै,
या ही हेठ कैर मूंग आखा नहीं खावणा॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(१५)

ज्ञान और क्रिया एक रथ के हैं दोनो चक्र
जैन अवतार सारे यों ही फरमा गये।
तो भी कई ज्ञान को प्रधानतया मान्य कर,
ढीले हो क्रिया में एक चक्के को गमा गये।
भिक्षु गुरुदेव तब सोच के समस्त भेव,
एक तुल्य जान दोनों फिरथी लगा गये।
भनै नत्थमल्ल नहीं नव्य ताकरी है और
खाली रथ ही को मूल रूप में दिखा गये॥

(१६)

चक्र की शिथिलता न होवै फेर कभी एवं
करके विचार सीमा बंधन जुड़ा गये।
सारथी भी एक रहै वाहन क्रिया में छेक,
पंथ राज पंथ तेरापंथ को बता गये।
नव्यता कहां है जब रथ ना बनाया नव्य
चक्र जोड़ने में खूबी खूब झलका गये
भनै नत्थमल्ल नहीं नव्यता करी है और
खाली रथ ही को मूल रूप में दिखा गये॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(१७)

सुणता हा लोक चोथै आरै में हो सत्ययुग
तीर्थंकर चार बीस भये सुखदायी हैं
कहती ही आंख मैं तो देखे बिन मानूं केम
होती तब आपस में दोनों के लड़ाई है।
कान तब सरण लियो भिक्षु को समर्थ जान
शरणांगत जान सागी रचना रचाई है
भनै नत्थ भिक्षु कान आंख को मिटा न झोड
कानां स्यूं सुण्योड़ी बात आंख्यां स्यू दिखाई है॥

(१८)

संयम विशुद्ध धार्‌यो धारी त्यौं कठिन वृत्ति
नीति की विशदता को खूब अहनाण है
कठिन-कठिन कष्ट स्पष्ट दिन रात सहे
जीवन के दिन बीते एक ही समान है
भौतिक सुखों की नहीं रत्तिभर चाह रही
आतम में लीन कर्‌यो स्वर्ग में प्रयाण है
हर्ष उल्लासमय आज को दिवस यह
भिक्षु की सचावट को अंतिम प्रमाण है॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य कालूगणि
(कवित्त छन्द)

(१९)

गुण है अंनत किन-किन को बखांन करूं
मेरो मन यौं विचार-सागर मै मिलग्यो।
सर्वगुण युक्त एक सोझके निकालूं शब्द,
करूं उपमान समाधान यह खिलग्यो।
घूम्यों चार्युं और पर कहां भी न पायो तब,
राम शब्द आके मम स्मृति पास हिलग्यो।
योग्य जान उपमा लगान लाग्यो इतने में
राम को तो नाम पूज्य नाम ही में मिलग्यो॥

(२०)

कल्पवृक्ष कामधेनु चिंतामणि आदि सब,
ज्योंहि मांगै त्योंही देन शक्ति अनु सरग्यो।
किंतु वे ही आप तुल्य दूसरा बनाया और,
आजणों तो ऐसा वृत्त श्रृति में न परग्यो।
वैसे ही जिनेंद्र गणधरों के निहारो ख्यात
आपके समान लारै कोई भी न धरग्यो
भनै नत्थमल्ल पर कालू की विशेषता या
आपकै सरिखो को सरीखो त्यार करग्यो ॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

इन्दव छन्द

(२१)

शीख ग्रही मघवा गुरु से, अनिमेष क्षणे मघवा पद पायो
उत्तम आकृति योग्य लख गुरु, डालम ने गणनाथ बनाया।
मूल के नंद मुनींद न तूं अहा, खूब ही कीरति कोश कमायो।
पंथ त्रयोदश को सगले नभ में, रवि ज्यों जग में चमकायो॥

(२२)

मोहनि मंत्र ज्यूं भव्यन को मन, मोहति मोहनि मूरति तेरी,
सा बिछुरी दृग दर्शन पें पर है, मन मंदिर मांह वसेरी
सुंदर-सुंदर काम कियो सब, ओर तो कीरति कहुं कहा तेरी
मूल के नन्द मुनीन्द न क्यों,न करी कछु स्वर्ग मैं जाणै री देरी॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(२३)

शीख दई गुरु भिक्षु सही रखनी क्षमता जिन वाक्य निहाली,
क्रोध नहीं करणो कबही तिनस्युं गण नित गौरवशाली।
कोउ कदाग्रह कोड करो पर शांति भजे वह जावत खाली।
आप हि स्युं थक जा अगलो नहीं बाजत है इक हाथ स्युं थाली ॥

(२४)

विस्मृत की स्मृति होत परं, स्मृति की स्मृति कौन मनुष्य करै है,
विस्मृत सद्गुण मै हुं नहीं मम मानस, तो पिण यूं उ मनुष्य चरै है।
कालु के सद्गुण तुं 'स्मर रे स्मर' ताकृत जो उपकार परै हैं
केम करूं समरूं किम में गुण, तो सब नेत्र प्रत्यक्ष खरे हैं॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(२५)

अच्छ उपदेश देश-देश में विशेष देके
कर्‌यो जगतार त्यों अपार उपकार हो।
हर्‌यो सब भर्म पर्म धर्म को बतायो मर्म,
सिद्धि शर्म ध्यान चित्त ध्यातो इकधार हो।
मान कौन अंस अवतंस हो विचच्छन को
लच्छ न सुरम्य को हरम्य अविकार हो।
शांति को निशेश और कांति को दिनेश तोर
मूल को किशोर कालू कलि अवतार हो॥

(२६)

कुल को कुलीन हो सुलीन सौम्य ज्ञान मांह,
शासन पनाह राह मोख की बता गयो।
भूप विश्व रूप नंद सो अनूप रूपवान
आन देवराज ज्यों अखंड ही मना गयो
उपमा अशेष जेती पढ़ते वेश मांह
ताको उपमेय उपमान तें बना गयो
करके प्रचंड राज एष कलिकाल कालू
दिनां चार कीसी अहा चानणी दिखा गयो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य तुलसी
(कवित्त छन्द)

(२७)

जाके नाम से ही वृक्ष तुलसी भयो है पूज्य
(तो) पूज्य क्यों न होवै जो है मूल ही को तुलसी।
जान परमातमा स्यूं तुलसी भजेगो वोही,
कर्म कुल नाश परमातमा स्युं तुलसी।
होवत विकल्प इस्यो पूज्य आर पंचम में,
कैसो भयो ताको न्याय यही एक घुलसी।
भनै नत्थमल्ल जड्या मोक्ष का किवांड पड्या
(वै) इस्या गुरु होयां बिना पाछा कियां खुलसी॥

(२८)

तीन सुर एक ठोर मिली सुर लोक बीच
धर्म को विमर्ष कर्यो हर्ष अनपार है।
भर्म सृष्टिनाश सत्य सृष्टि को विकास ततः
पालन प्रयास स्वतः करणो उदार है।
योजनानुसार पूर्व भिक्षु अवतार लियो
आवश्यक जीत जन्म धार्यो अविकार है।
भनै नत्थमल्ल अब रक्षा को समय जान
तुलसी मुनीशवर्य धार्यो अवतार है॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(२९)

वचन विलास करै विदित महान् विज्ञ
लवण सुयोग्य करै दाल शाक रोटी को।
सूरज विकास करै व्योम को महत्त्वतत्त्व
हिंदू कुल पुष्ट करै श्रेष्ठपन चोटी को।
ध्वनि श्रव्य काव्य को वधावत अतोल मोल,
सलिल जनात शुक्ति जात उच्च कोटी को।
भनै नत्थमल्ल त्यूंही तुलसी मुनीश ईश,
खूब ही बधायो तोर कालू की कसौटी को ॥

(३०)

चातक है चित्त मेरो तूं है, जलवाह तुल्य,
चित्त है चकोर जो तूं चंद्रम प्रकाम है।
मेरो चित्त मंदिर जो दीपक अनूप तूं है,
तूं ही चित्त इच्छित को खास विश्राम है
चित्त चंचरीक मेरो तूं है मकरन्द पान,
पावन करावण को कमल ललाम है
भनै नत्थमल्ल मेरो जीवित आधार तू हीं,
रटूं तेरो नाम यही एक मेरो काम है ॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(३१)

सात ही समुद्र सरस्वति को पिछाणो रूप
मेरो तो स्वरूप प्रभो आज कर छानो है।
जब थो जमानो सत्ययुग को सुहानो तब
व्यक्त थो खजानों वह आज तो छुपानो है।
अर्ज अब मानो करो प्रकट पुरानो रूप,
तुलसी सु गौर विद्या-विनति पे ठानो है
भनै नत्थमल्ल मानों वही प्रकटा नो लेके
काव्य को बहानो सरस्वती को खजानो है॥

(३२)

वासर नौमी को सात वर्ष को पिछान प्रश्न
मान शिशु एक तब ज्ञानयुत कर्‌यो है।
सात वर्ष मांहि कांइ निरखी विशेषताई
उत्तर अनेक सात ज्यादा चित्त हर्‌यो है
क्षमा अनुभव नीति उत्तर प्रदान शक्ति
सुदृढ़ प्रतिज्ञ भागी कृति शर्क्ति वर्‌यो है
भनै नत्थमल्ल सात धात स्थान सात बाट
रचके विधाता तुलसी को गात धरयो है॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(इन्दव छन्द)

(३३)

चंद के रूप में है जो तेरो मन, तो मैं चकोर को रूप बनाऊं।
हौवै यदि तुमरो मन सूरज, तो प्रभु चातक मैं बन जाऊं।
हो यदि वा जलराशि आकार, तो मीन के रूप मैं अंदर पाऊं।
क्यूं ही न क्यूं ही उपाय करी मन, देखल्यूं तो मैं जरूर रिझाऊं ॥

(३४)

अंबुज है यदि जो तुमरो मन, तो भंवरो वन मैं ललचाऊं।
है सुर वृक्ष तो मैं बन याचक साचलि ही विरूदावली गाऊं।
रूं को है रूप यदि मन को, परि स्वेद बनी उसमें वह जाऊं।
क्यूं ही न क्यूं ही उपाय करी मन, देखल्यूं तो मैं जरूर रिझाऊं॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(३५)

किंतु करूं कहा देव ! नहीं, जब रूप ही चित्त को देखन पाऊं,
होय निराश पुनः मन धर धीरज ले, बालक को अभिरूप बनाऊं।
मैं तुम बालक तूं प्रति पालक, हार्दिकं भाव ओ स्पष्ट सुनाऊं।
क्यूं ही न क्यूं ही उपाय करी, मन देख लूं तों मैं जरूर रिझाऊं।।

(३६)

काल प्रपंच तें कालुगणिंद पधार गये सुरलोक की फोजां,
शाम्मन काम संभार के सांप्रत, है तुलसी अवतार मनोजां।
बात कहा करूं मानव की लख, होत अचंभित आप विडोजा।
एक स्यूं एक मिलै अधिका गुरु,आपणै भाग्य लिख्योड़ी है मौजां।।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(३७)

काल स्वभाव श्रमोद्यम निश्चित मुख्य निजास्पद में दरसावै।
आतम ही परमातम ह्वै नभ दीप का एक स्वरूप दिखावै।
ज्ञान क्रिया करता भोक्तादिक को अविच्छिन संबंध बतावै।
श्री तुलसी जिन आगम के अनुसार ही यूं सब काम चलावै॥

(३८)

सर्व साधारण है जग के जन जैन सिद्धांत के मर्म सुनावै
शक्ति अनंत-अनंत है ज्ञान यही जिनवानि को मंत्र पढ़ावै
नित्य अनित्य रू एक अनेक सामान्य विशेष सूं भेद गमावै।
श्री तुलसी जिन आगम के अनुसार ही यूं सब काम चलावै॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(३९)

पूर्व उपकार भार तनिकसी जीह्वा पर
धरूं तो अजान को शिरेमणि कहाऊं मैं।
संबंध विचार गुरु शिष्य को उदार यदि
बनूं स्तुतिकार विज्ञ मानी नाम पाऊं मैं।
वरणूं विशाल गुण मुग्ध को स्वरूप काल
कैसे तुच्छ कंठ मैं सरस्वति बिठाऊं मैं।
भनै नत्थमल्ल दोय चार अक्खरां को ज्ञान
आपको दियोडो भेट आपकै चढ़ाऊं मैं॥

(४०)

बावन वरन को शरन ले चरण तुव वरणूं
कहांलों जोलों जरूरी हजारां की
कीन्हे उपकार जिह जीहते हजार वार
कहत सुमार नहीं संख्या जिमि तारां की
लक्ष कोटि संख्य असंख्य वरन होते होती
परतंत्रता न आयु अधिकारां की
भनै नत्थमल्ल तोलां करके दिखातो
हाथ बुद्धि चकराय देतो एक वार चारां की॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

(४१)

सूरज पतंग नाम विकल आलोक लखि
चंद्र औषधि को पति शांति के अभावतें
वक्र भयो मंगल भी मंगल विधान शून्य
बुद्ध श्याम अंग विज्ञपन के विभावतें
वाचस्पति जीव शुव्र काव्य को बनायो मिष
छाया सुत श्नैश्चर वीक्षा अनुभावतें
अहा पलटा ने एसे सात ही ग्रहों के नाम
तुलसी तिहारे पूर्ण गुण के प्रभावतें॥

(४२)

भक्ति साझने के लिए क्यूं हिक तो भेंट करां
शुद्ध निरवद्य चीज अपनी कमायोडी।
सोच इम पृथ्वी सहन शीलता को भेट करी
पानी भेट करी निज स्वष्ठता उपायोडी।
अग्नि भेट कर्यो तेज वायु पराक्रम तथा
वनस्पति शीतलता अद्भुत लडायोडी
भनै नत्थमल्ल पूज्य तुलसी समक्ष यह
पांचूं चीजां भेट पांच घरो स्यूं है आयोडी॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

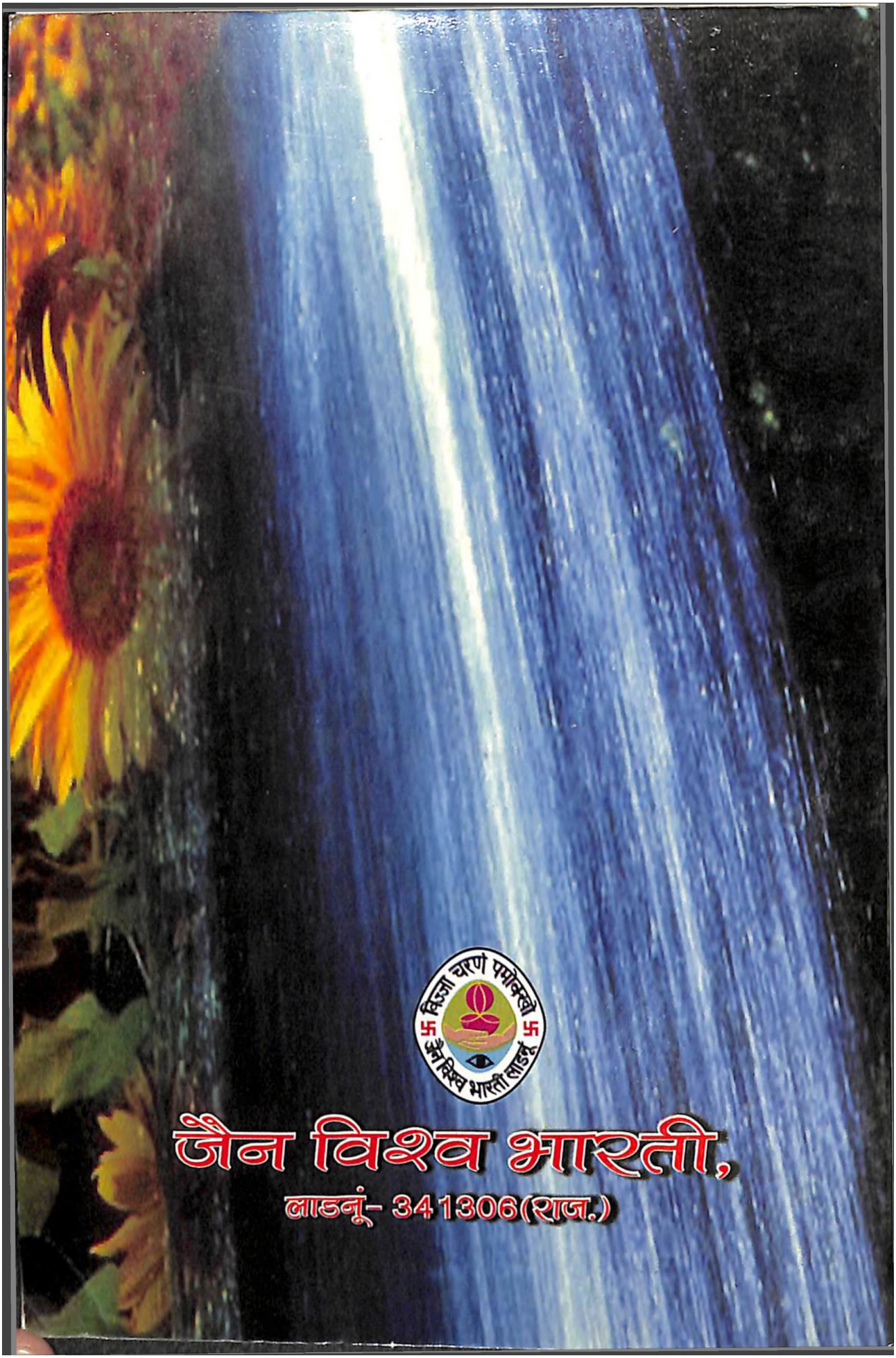

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org